विचार बिन्दु

जिस काम की तुम कल्पना करते हो उसमें जुट जाओ। साहस में प्रतिभा, शक्ति और जादू है। साहस से काम शुरु करो पूरा अवश्य होगा।

–अज्ञात

आपके विचारार्थ!

इधर देश में जो नई संस्कृति विकसित हुई है उसके प्रमुख घटकों में से एक है बायकॉट। जो हमारे साथ नहीं है, उसका, उसके रचे का बायकॉट करने का आव्हान। इसके बाद जैसी श्रद्धा हो। श्रद्धानुसार तोड़ फोड़, मार-पीट,आगजनी - कुछ भी की जा सकती है। अगर नहीं तो सोशल मीडिया पर बायकॉट का आव्हान तो सस्ता-सुंदर टिकाऊ तरीका है ही। इन दिनों एक फ़िल्म के बायकॉट का सीज़न चल रहा है। जैसे-जैसे यह सीज़न ढलेगा, अगली फ़िल्म का बायकॉट शुरू हो जाएगा। नाम तो घोषित हो ही चुका है। यह जान पाना कठिन है कि बायकॉट की वजह क्या है। वैसे वजह न हो तो बनाने में कोई ख़ास देर भी नहीं लगती है। वक़्त ज़रूरत हेडक्वार्टर से इसके वास्ते तर्क सप्लाई भी किए जाते हैं। उत्साही और कर्मठ कार्यकर्ता उन्हीं तर्कों को आगे ठेलते जाते हैं। ऐसा करके उनकी दिहाड़ी पक्की या अगर वे पेरोल पर न हों तो उनकी वफ़ादारी प्रमाणित हो जाती है।

ऐसे कर्मठ वीरों की कुछ टिप्पणियां देख रहा था तो एक मज़ेदार टिप्पणी पर ध्यान गया। उन्होंने लिखा कि वे यह फ़िल्म सिनेमाघर में जाकर नहीं देखेंगे। वे इसे अपने मोबाइल पर देखेंगे! यह घोषणा करके वे हर आम-ओ-ख़ास को बता देना चाहते थे कि ऐसा करके वे उस बायकॉटितफ़िल्म से जुड़े कलाकार को आर्थिक क्षति पहुंचा कर उसकी कमर तोड़ देंगे। कमर तोड़ देना हमारे समय की लोकप्रिय अभिव्यक्ति है। कमर लोगों की ही नहीं आतंकवाद जैसी प्रवृत्तियों की भी तोड़ी जाती है। अब अगर कोई किसी की कमर तोड़ना चाहे तो आपको आपत्ति क्यों होनी चाहिए? लेकिन इन महोदय ने कमर तोड़ने का जो तरीका निकाला है उसे मुझे काफी कुछ सोचने को प्रेरित किया। पहली बात तो यह कि इन्हें बायकॉट भी करना है और फ़िल्म भी देखनी है। ख़ैर, यह उनका चयन है। मूल बात यह कि क्या कोई भी ग़ैर कानूनी तरीका अपना कर आप सही काम कर सकते हैं? किसी फ़िल्म का विरोध क्या एक ग़ैर कानूनी तरीके से करना ठीक है? इन्होंने मोबाइल पर फ़िल्म देखने की जो बात की है वह सीधे-सीधे पाइरेसी की बात है, और हर कोई जानता है कि पाइरेसी हमारे देश में कानूनन अपराध है। इस अपराध के लिए तीन बरस तक की क़ैद और तीन लाख रुपये तक का ज़ुर्माना हो सकता है। ऐसा अपराध करके ये किस तरह का विरोध करना चाहते हैं?

लेकिन हमने उचित और अनुचित, सही और ग़लत की फ़िक्र पहले भी कब की है? केवल पाइरेसी की ही बात करें तो पुरानी पीढ़ी के लोगों को वह समय अभी भी याद होगा जब खाली कैसेट्स रिकॉर्डिंग सेण्टर पर ले जाकर उनमें अपनी पसंद के गाने भरवाए जाते थे! उस ज़माने में दिल्ली के एक ज्यूस बेचने वाले उद्यमी ने पाइरेसी के दम पर ही अपना बहुत बड़ा एम्पायर खड़ा कर लिया था। कैसेट्स का ज़माना बीता तो सीडी का ज़माना आया, और फिर पेन ड्राइव का ज़माना आ गया। ये साधन भले ही बदले, हम तो वैसे के वैसे रहे। पहले भी अवैध रूप से गाने भरवाते थे, बाद में भी भरवाते रहे। हमने कभी सही-ग़लत में भेद नहीं किया। हमारा संगीत प्रेम बरक़रार रहा। संगीत के साथ-साथ हमने फ़िल्मों से भी इसी तरह प्रेम किया। वीसीआर के ज़माने में हम धुंधले और ख़राब प्रिण्ट वाली फ़िल्में देखकर अपना मनोरंजन करते थे तो सीडी के ज़माने में ठेलों पर मिलती पाइरेटेड सीडी हमारे लिए मनोरंजन का बड़ा साधन बनी। अगर बीस-पच्चीस रुपये में फ़िल्म की पाइरेटेड सीडी मिल जाए तो हमें क्या पागल कुत्ते ने काटा है कि सौ-सवा सौ रुपये में ऑरिजिनल और वैध सीडी खरीदें। अब तो लोगों की पढ़ने की आदत कम हो गई है, अन्यथा एक ज़माना था जब हर महानगर, नगर और बड़े कस्बों के फुटपाथों पर लोकप्रिय किताबों के न्यूज़प्रिण्ट पर छपे पाइरेटेड संस्करण आसानी से सुलभ रहते थे। आजकल यही काम पीडीएफ वितरण के माध्यम से होने लगा है।

लेकिन हमने उचित और अनुचित, सही और ग़लत की फ़िक्र पहले भी कब की है? केवल पाइरेसी की ही बात करें तो पुरानी पीढ़ी के लोगों को वह समय अभी भी याद होगा जब खाली कैसेट्स रिकॉर्डिंग सेण्टर पर ले जाकर उनमें अपनी पसंद के गाने भरवाए जाते थे!

और यही हाल तकनीक के मामले में भी रहा। कम ही लोग होंगे जिन्होंने अपने कम्प्यूटर्स में उपयुक्त कीमत देकर खरीदे गए सॉफ्टवेयर्स काम में लिये हों। ज़्यादातर तो अपना काम कॉपी किये हुए सॉफ्टवेयर्स से ही चलाते रहे हैं। अब भी चलाते हैं। अगर आप ऐसे किसी उपभोक्ता से बात करें तो उसका एक ही जवाब होता है, "क्या करें, ऑरिजिनल सॉफ्टवेयर बहुत महंगे होते हैं!" यह सही है कि ऑरिजिनल सॉफ्टवेयर महंगे होते हैं, लेकिन क्या किसी भी चीज़ का महंगा होना हमें चोरी करने और अनैतिक होने का अधिकार दे देता है? पाइरेसी असंदिग्ध रूप से एक अनधिकार चेष्टा है। यह चोरी का पर्याय है। जिस चीज़ का आपने मोल नहीं चुकाया है उसे आप अनुचित तरह से हासिल करके प्रयोग में ले, यह चोरी नहीं है तो क्या है? वैसे यही तर्क हममें से बहुत सारे लोग ट्रैफ़िक पुलिस की मुट्ठी गर्म करने के मामले में भी देते हैं। वैध चालान महंगा है इसलिए हमने सिपाही की मुट्ठी में सौ का नोट खिसका दिया। रोडवेज़ की बसों में नियमित रूप से अपडाउन करने वालों में से भी बहुत सारे ऐसा ही करते हैं। अपने जीवन में दो बार जब मुझे भी लम्बे समय के लिए अपडाउन करना पड़ा तो शुभ चिंतकों ने ऐसा ही करने की सद्भावनापूर्ण सलाह दी। यह अलग बात है कि अपनी मूर्खता के चलते मैंने उनकी सलाह को नहीं माना। लेकिन तब मैंने एक और मज़ेदार बात नोट की। जो यात्री इस समानांतर व्यवस्था का उपयोग करते थे कण्डक्टर महोदय उनका ख़ास ध्यान रखते थे, और मुझ जैसे लकीर के फकीर उनकी अवहलेना के पात्र बनते थे।

असल में यह समानांतर अवैध व्यवस्था पूरे देश में चल रही है। हमने इसे जीवन पद्धति के रूप में स्वीकार कर लिया है, यह बहुतों को रास भी आती है। पाइरेटेड कैसेट, सीडी बनाने वाले, मोबाइल में फ़िल्में और संगीत अपलोड करने वाले, कम्प्यूटर में पाइरेटेड सॉफ्टवेयर इंस्टॉल करने वाले, बिना वैध टिकट यात्रा की सुविधा प्रदान करने वाले, बिना चालान काटे आपको छोड़ देने वाले - ये सब और इस तरह के अन्य अनेक लोग बिना किसी या बहुत कम लागत से ठीक-ठाक कमाई कर लेते हैं। एक उपभोक्ता या नागरिक के रूप में हम भी चार पैसे बचा लेने का सुख और संतोष प्राप्त कर लेते हैं। लेकिन यह सब करते हुए हम कभी भी यह नहीं सोचते हैं कि ऐसा करना कितना ग़लत है! जब आप कोई फ़िल्म इस तरह देखते हैं, कोई गाना इस तरह सुनते हैं, कोई किताब इस तरह पढ़ते हैं, कोई सॉफ्टवेयर इस तरह काम में लेते हैं तो आप उनका हक़ मार रहे होते हैं जिन्होंने इनको रचने में कड़ी मेहनत की है। यह सब रचना बहुत आसान नहीं होता है। किसी फ़िल्म बनाने वाले से पूछिये कि उसने फ़िल्म बनाने के लिए कितने पापड़ बेले हैं, किसी लेखक से पूछिये कि उसने एक किताब लिखने के लिए कितनी रातें जागकर बिताई हैं। और आप हैं कि उनका हक़ मार कर उनके सृजन का उपभोग कर रहे हैं! सोचिये, अपने खून पसीने की कमाई से एक छोटा-सा घर बनवा कर उसमें रहने और गुण्डागिरी से किसी के बने बनाए घर को हथिया कर उसमें रहने में कोई फर्क है या नहीं? एक आदमी है जो बड़ी मुश्किल से पैसे बचा कर मोबाइल खरीदता है और दूसरा है जो झपट्टा मार कर उसे छीन ले जाता है! इस बात को समझा जाना ज़रूरी है कि पाइरेटेड चीज़ों का उपभोग आपको यही दूसरा आदमी बनाता है।

मुझे भारतीय समाज की सबसे बड़ी विडम्बना यही लगती है कि वैसे तो हम आदर्श की बहुत बड़ी-बड़ी बातें करते हैं लेकिन जब उन्हें अपने जीवन पर लागू करने का मौका आता है तो हम उन सबको भुला कर व्यावहारिक हो जाते हैं। आजकल तो तारीफ में भी यही कहा जाता है कि अमुक बड़ा प्रैक्टीकल है। प्रैक्टीकल अर्थात जो सही ग़लत के झमेले मेंपड़े बग़ैर येन केन प्रकारेण अपना काम निकाल ले। महात्मा गांधी साधनों की पवित्रता पर बहुत बल दिया करते थे। उनके लिए साध्य प्राप्त करने से ज़्यादा महत्ता साधनों की शुचिता की थी। आज हमारा सोच बदल चुका है। आज सिर्फ यह देखा जाता है कि हमने प्राप्त क्या किया है। यह बात शायद ही कभी देखी जाती हो कि हमने वह कैसे प्राप्त किया है। और अगर कभी देख भी ली जाती है तो उसे देख कर अनदेखा कर दिया जाता है। अपने चारों तरफ हम वैभवशाली और शक्तिशाली लोगों को देखते हैं, हमें इस बात की थोड़ी बहुत जानकारी भी होती है कि उन्होंने यह वैभव या ताकत कैसे हासिल किया है, लेकिन इस जानकारी के बावजूद उनकी इन उपलब्धियों के प्रति हमारे सम्मान में कोई कमी नहीं आती है।

सोचिये, हम कैसे हृदयहीन, आदर्शविहीन, मूल्य निरपेक्ष समाज में बदलते जा रहे हैं! क्या यह बदलाव हमारे व्यापक हित में है? इस तरह जो देश बनता जा रहा है उसका भविष्य कैसा होगा - यह कल्पना ही सिहरा देने वाली है।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

बड़े भाग मानुष तनु पावा, अनुभूति यदि नहीं तो नित करे

प्रो. (डॉ.) वीर बहादुर सिंह

मानस कार ने उपरोक्त चौपाई कह कर मनुष्य को यह तो जता दिया कि उसे यह मानव शरीर बड़े भाग्य अथवा ईश्वर कृपा से मिला है जबकि मनुष्य बहुधा इसे आटोमेटिक क्रिया समझता है। ऐसा नहीं होता। लोग कहते हैं कि शरीर बृद्ध होने पर आत्मा या शरीरी नए शरीर में आश्रय ले लेता है, जैसे हम पुराने फटे कपडे उतार कर नए वस्त्र धारण करते हैं। इस क्रिया के संपन्न होने में अनेक परिस्थितियां गौण रहती हैं जो प्रदर्शित नहीं होती, परन्तु अगले जन्म की योनि का निर्धारण करती हैं।

शास्त्र बताते हैं कि वर्तमान जन्म में मनुष्य की वृतियां कैसी रही हैं यथा सतोगुणी, रजोगुणी या तमोगुणी /गीता में इस बारे में विस्तार से बताया गया है। आवश्यक नहीं कि मनुष्य योनि मिले, सूअर का शरीर भी मिल सकता है।

इसलिए; **सुर दुर्लभ सब ग्रंथहि गावा;** शास्त्र कहते हैं कि मानव शरीर दुर्लभ है देवता भी इसके लिए लालायत रहते हैं,

इसलिए मनुष्य बड़भागी है तन को पाकर यह साधन योनि है, इसलिए मानव तन मोक्ष का द्वार भी कहा जाता है–

;साधन धाम मोक्ष कर द्वारा ;, और फिर भी मनुष्य अपना परलोक नहीं समारता तो इससे अधिक दुर्भाग्य और क्या हो सकता है? उसके लिए पछताने के सिवाय कुछ नहीं होता और वह दु:ख भोगता रहता है यह मानव शरीर सब कुछ दे सकने का सा मर्थ रखता है;

साधन धाम मोक्ष कर द्वारा, पाय न जेहि परलोक सँवारा;

सो परत्र दु:ख पावै सर धुनि धुनि पछताई।

कबहुँक करि करुणा नर देहि, देत ईश बिनु हेतु सनेही।

मानव जीवन प्राप्त कर विषय वासनाओं में मन लगाना, अमृत के बदले बिष ग्रहण करने जैसी मूर्खता है इसे कोई भी अच्छा नहीं कहता। नर तन प्राप्त कर भी बिषयों में आशक्ति है तो चौरासी लाख योनिओं में भटकने की निश्चित तैयारी है इन योनिओं में अंदाज, पिण्डज, स्वेदज और स्थावर, आते हैं, मानस में काकभुशुण्डि की कथा इस सम्बन्ध में पढ़ने लायक है।

नर समान नहि कवनिउ देही, मानव तन को पाकर भी यदि बड़भागी ने अपना परलोक नहीं सँवारा, फिर उसके भाग्य में पछताने के अतिरक्त कुछ नहीं बचता, और वह दु:ख भोगता रहता है। **;साधन धाम मोक्ष कर द्वारा, पाय न जेहि परलोक सँवारा;, सो परत्र दु:ख पावहि, सर धुनि धुनि पछिताय।** क्योंकि ईश्वर की बड़ी कृपा से ही हमें यह मानव शरीर प्राप्त होता है। फिर **कबहुँकी करि करुणा नर देहि, देत ईश बिनु हेतु सनेही।** इसलिए इस शरीर को विषयों में संलग्न करना एक तो समय की बर्बादी है और उस पर फिर अनंत दुखों को आमंत्रण। जीवन का समय इसलिये बड़ा अमूल्य है। विषय वासनाओं में मन लगाना अमृत के बदले बिष ग्रहण करने जैसी मूर्खता है और इसे कोई भी अच्छा व् हितकारी नहीं मानता।

परिवारीय व्यक्ति के लिए कर्मों का त्याग संभव नहीं है इसलिए उनसे ये अपेक्षा है कि वे मन से ही विषयों का त्याग करें क्योंकि मन को विषयों में आसक्त करना मृत्यु वरन के समान है। विरक्त लोग जिन्होंने कर्मों का त्याग कर समस्त सांसारिक वृत्तिओं को त्यागकर सन्यास ठाहण कर लिया है उनके किये वासनाओं से पूर्ण विरक्ति थोड़ा कठिन अवश्य है किन्तु मोक्ष के लिए उत्तम साधन और शीघ्र फलदाई है। लेकिन उनेह भविष्य में किसी भी परस्तिथि हो, वापिस कर्म प्रवर्ति में नहीं लौटना चाहिए। विरक्तों को मन से भी विषय वासनाओं का चिंतन करना बड़ी भूल है। एक उत्कृष्ट उदाहरण है कि एक मंदिर के सामने एक वेश्या का कोठा था वहां सदैव आरती के समय और बाद में नाच-गाना चलता रहता था जिससे वहां जाने वालों का मनोरंजन होता था और वैश्या की सुंदरता लोगों को मोहित करती थी। मंदिर के पुजारी भक्तो के साथ खूब जोर से आरती करते, लेकिन उनके मन में उस वैश्या की छवि और मधुर घुंघरुओं, गानों की आवाज हमेशा उनको लालायित करती उस वैश्या के समीप जाने की। लेकिन समाज के भय से वे अपनी उस कुंठा को प्रदर्शित नहीं करते। समय बीतता गया और काल के प्रभाव से जब दोनों मृत्यु को प्राप्त कर धर्मराज के सामने पेश किये गए। तो धर्मराज ने कर्म और सोच के अनुसार वैश्या को स्वर्ग और पुजारी को नर्क का हकदार कह कर उचित आदेश कर दिया। पुजारी ने क्रोध वश निवेदन किया कि आपका न्याय मुझे नर्क और वैश्या को स्वर्ग देना न्यायसंगत नहीं है। लेकिन जब धर्मराज ने उन्हे ये कहा कि भले ही आप ईश्वर की पूजा-अर्चना में लगे थे लेकिन वैश्या के नाच-गाने के स्वर आपको विचलित करते और आप मन में सोचते कि किस प्रकार उस सुंदरी के आगोश में प्रवेश किया जाय जबकि ये वैश्या मंदिर की घंटियों और आरती के वचन सुन मन अपने ग्राहकों को संतुष्ट करते हुए ईश्वर से अनुनय-विनय करती कि– **'हे प्रभो मुझे इस गंदे धंधे के नरक से कब मुक्ति दिलाएंगे।'** इसलिए मेरा न्याय बिलकुल उचित है, तुम नरक के लिए ही हकदार हो। यह प्रसंग मेरे विचार से कर्म और मन की सोच के परिणामों के अनुरूप है।

वर्तमान काल में सर्वत्र मानव कुत्सित कर्मों, भ्रष्टाचार, हत्या, बाल अपराध, बेईमानी, झूंठ-फरेब आदि में व्यष्त है और ऊपर से सफ़ेदपोश बनकर एक बनावटी चेहरा और दिखावटी आचरण लोगों को भ्रमित करने के लिए ऐसे लोग अपना परलोक तो क्या संभवत: आगे के अनेक जनम में भी मोक्ष के योग्य नहीं होते और निरन्तर मनुष्य योनि होते हुए भी निम्न श्रेडी में ही अनेक दु:ख भोगते रहते हैं। आजादी का अमृत महोत्सव हमने भले ही मना लिया हो लेकिन हम अपनी मानसिकता और कर्म अच्छी तरह जानते है, दूसरों को भले ही न दिखे।

भगवान् श्री कृष्ण ने महाभारत में अनेक रीत से अर्जुन को जीवन के सभी रहस्यों से अवगत कराया, तब कही जाकर अर्जुन का भ्रम खंडित हुआ और वह संग्राम लड़ने को तत्पर हुआ और सभी विधर्मिओं का वध करने में सक्षम हुआ, वे थे तो सभी उसके परिजन और सगे सम्बन्धी ही। इसलिए मनुष्य को कभी भी यह भ्रम नहीं पालना चाहिए कि कौन देख रहा है?

बिना किसी को बताये भ्रष्टाचार, छल, कपट, व्यभचार, हत्या आदि जघन्य पाप /अपराध करते रहो। अभी देश के दो प्रदेशों में करोड़ों की धन राशि और बहुमूल्य करोड़ो के आभूषण कई छापे मारी में सरकारी विभाग द्वारा पकडे गए। देश के कानून के अनुसार उनेह अपराध की सजा तो पुलिस दिलवा देगी लेकिन ईश्वर के यहाँ इस पाप की सजा भी निश्चित मिलेगी इसमें अन्य कोई भी दखल नहीं दे सकेगा, न वकील और न गवाह और न न्यायधीश।

मनुष्य आखिर अपने को जीवन के परम उद्देश्य को प्राप्त करने को क्यों नहीं प्रयत्नशील होता? इसका कारण यह नहीं कि वह उस उद्देश्य को पा नहीं सकता, अपितु अपने चहुँ ओर जो वातावरण यथा सामाजिक, नैतिक, मौद्रिक आदि परिलक्षित होता है उससे आकर्षित होकर सही रास्ते से हट जाता है विदेशी पश्चिमी सभ्यताओं व् संस्कृतिओं के आकर्षण, अपमिश्रण और संकरण के प्रभाव से हमारी सनातनी संस्कृति प्रदूषित होती चली गयी फलस्वरूप सनातनी समाज में मानवीय नैतिक मूल्यों का ह्रास चरम पर पहुँच गया इनके प्रति आकर्षण या कहे दबाव इतना अधिक व प्रभावशील था कि लोग फिर वापिस अपनी पुरानी व्यवस्थाओं से मोह भंग होने से पुन: नहीं लौट सके। संक्रमण और संकरण का ये सिलसिला अब अधिक सुगम भी हो गया है और आवागमन एवं संचार माध्यमों के चरम विकास से स्वत: फलफूल रहा है।

लेकिन पश्चिमी सभ्यताएं भी अपनी संस्कृतिओं से अब ऊबने लगी हैं क्योंकि वहां मानसिक शांति और संतुष्टि नहीं है और उसकी खोज में वहां के धनाढ्य लोग यदा कदा सब कुछ त्याग भारत की तरफ आकर्षित हो यहाँ कही कम जरूरतों के साथ जीवनयापन को महत्व देने लगे हैं। इसलिए जीवन में सत्संग और स्वाध्याय की बहुत अनुशंसा बताई गयी है। जन श्रुति के अनुसार **;खरबूजा खरबूजे को देख रंग बदलता है ;** बहुधा खिलाड़िओं के ग्रुप में हम खिलाडी बनते देखते हैं, किसानों के साथ किसान, फ़ौजिओं के साथ व्यक्ति फौज में जाने का मन बनाता है, यह अक्सर देखा जाता है कि डॉक्टर का बेटा / बेटी डॉक्टर ही बनना पसंद करते हैं। इसी प्रकार अपराधी प्रवर्ति वालों के साथी बहुधा अपराधी बन जाते हैं इसलिए जो हम सदैव देखते हैं हमारा मानस वही पृष्टभूमि पकड़ने या बनने की कोसिश करता है। एक दूसरा पक्ष भी है वह यह कि मानव मूल्यों या नैतिक मूल्यों के विपरीत जाने में सुगमता लगती है जब कि मानवीय मूल्यों के धारण करने के लिए साधन करना पडता है और साध्य तो तभी सिद्धि होता है जब उचित वातावरण मिले और साथ में वांच्छित निर्देशन अथवा स्वाध्याय। निर्देशन योग्य व्यक्ति/गुरु ही प्रदान कर सकता है अन्य कोई नहीं वर्तमान समय में चिटिओं की भाँति गुरु, निर्देशक, अलग-अलग समुदाय, धर्म। संप्रदाय के अपनी अपनी दूकान चला रहे हैं और हम उनसे आकर्षित हो उनके पिछलग्गू बन जाते हैं। और इन तथाकथित दुकानों में अपार भीड़ होने पर व्यभिचार पनपने लगता है ऐसे कई गुरु आज अनैतिक कार्यों के कारण जेल की हवा खा रहे हैं। लेकिन उनके और अन्य के अनुयायी में कोई कमी नहीं है ऐसे लोगों की सलाह, शिक्षा, वैज्ञानिक न होकर रूढ़िवादी होती है जो अशिक्षित व्यक्ति को चारित्रिक पैमाने पर नीचे गिरा देती है। अत: सत्संग सदैव विद्वान व चरित्रवान का ही करना चाहिए अन्यथा गलत व पोंगापंडितों से खुद तो डूबते ही हैं परिवार के अपरिपक्व बच्चे भी भ्रमित हो अवांछनीय कृत्यों का शिकार हो जाते हैं।

अत: **;बड़े भाग पाइव सत्संगा, बिनहि प्रयास होहि भव भंगा; इसलिए अनुशंसा की जाती है कि; धर्म न दूसरि सत्य समाना, आगम निगम पुराण बखाना;** धर्म के रास्ते पर चलने की सिफारिश की जाती है। यहाँ धर्म का अर्थ हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, सिख, जैन, बौद्ध आदि से बिलकुल नहीं है, बल्कि धर्म वो है जो धारण करने योग्य है, यथा मानवीय मूल्य, नैतिकता, निश्छल प्रेम, परोपकार, अहिंसा, दया सत्य व् अपरिग्रह। इन सभी मूल्यों के धारण से व्यक्ति निर्विकार और निर्लिप्त हो अपना कार्य करता रहता है और द्वेष, राग से ऊपर उठ जाता है यही वाँछित उपलब्धि है मनुष्य या मानव कह लाने के लिए।

; तात स्वर्ग अपवर्ग सुख धरिय तुला एक अंग, तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सत्संग ;

–प्रो. (डॉ.) वीर बहादुर सिंह,
डेरी व खाद्य विज्ञ, पूर्व कुलपति, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्व विद्यालय, उदयपुर, राजस्थान

हिन्दु-मुस्लिम समुदाय कर रहे गायों का उपचार

बीदासर के ग्राम जीली में गौ उपचार में जुटे ग्रामीण।

बीदासर, (निसं)। निकटवर्ती ग्राम जिली में गायों को लम्पी बीमारी से बचाव के लिए ग्राम के हिन्दु-मुस्लिम समुदाय एकजुट होकर सामाजिक एकता का संदेश देते हुए नि:स्वार्थ उपचार कार्य में लगे हुए हैं। ग्राम के श्याम सुंदर पारीक ने बताया कि सभी लोग एकजुट होकर गोमाता की सेवा कर रहे हैं और जाति व धर्म से इतर सभी लोग आज गाय माता पर जो आपदा आई है उसको सभी मिलजुल कर दूर कर रहे हैं। लगभग 20 दिनों से ग्राम की श्रीगोपाल गो सेवा समिति के निर्देशन में कार्य कर रही ग्राम की टीमों ने पूरे गांव व आस-पास के क्षेत्र की गायों 40 गायों को ठीक कर दिया। गोशाला में कुल 220 गायें है जिनमें से 20 गायें रोग से ग्रसित है तथा 25 गायें आइसोलेशन में है। इनके अतिरिक्त 150 आवारा बीमार गाये है जिनमें से 25 गाय ज्यादा संक्रमित है। इन गायों पर फिनायल और सोडियम हाइपोक्लोराइड के द्वारा का छिड़काव किया जा रहा है तथा दवाई व आयुर्वेदिक काढा लगातार गायो को दिया जा रहा है। गांव में पशुचिकित्सक रिया द्वारा सुबह शाम गायो की देखभाल की जा रही है। ग्राम के सरपंच हरदेवाराम ने कहा कि गांव के हिन्दू और मुस्लिम मिलकर गो माता की सेवा कर रहे है। ऐसे ही सभी को मिलकर गोसेवा करनी चाहिए जिससे इस मुश्किल समय में गोमाता को इस भयंकर बीमारी से बचाया जा सके। ग्रामीणों ने बताया की प्रशासन के द्वारा इस मुश्किल समय मे गायो को किसी भी प्रकार की कोई भी सुविधा गांवों में उपलब्ध नही करवाई गई है।

- **लम्पी बीमारी से बचाव के लिए एकजुट होकर सामाजिक एकता का संदेश दे रहे हैं**

गौ उपचार में लगी टीमों में ग्रामवासी श्यामसुंदर पारीक, हरफूल बागडा, हरदेवराम बागड़ा, प्रेम सिंह भाटी , ताहिर वेलिम, अदरमान, आसिफ, श्याम सुंदर भार्गव, पुखराज, शिवराज, नाथुराम बागड़ा, सुरजाराम भार्गव, भोमसिंह, देवाराम, जयनारायण लुहार, देवाराम बांगड़ा, मूलचंद बांगड़ा, मनफूल, रामदेवराम , राकेश बांगड़ा, अल्ताफ , इदरीश गौरी, कमलसिंह सहित अनेक ग्रामीण गौ उपचार के कार्य में लगे हुए हैं।

आदिवासी बालिका की कल्पना 'व्हाट इज दिस' किताब युवाओं में बनी प्रेरणा स्त्रोत

एक बालक के जीवन पर आधारित है किताब, तीन साल में पूरा किया लेखन कार्य

लालसोट क्षेत्र की सबसे कम उम्र की लेखिका बनी अंजलि जोरवाल।

लालसोट/दौसा, (निसं)। मंडावरी गांव की रहने वाली आदिवासी बालिका अंजली जोरवाल द्वारा नाबालिग रहते हुए लेखन की गई कल्पना 'व्हाट इज दिस' नाम की किताब युवाओं में प्रेरणा का स्त्रोत बनी है।

अट्ठारह वर्षीय अंजलि क्षेत्र की पहली एसी बालिका लेखक है जिसने महज 10 साल की उम्र में लिखने का जज्बा पैदा किया एवं 15 साल की उम्र से पहली किताब को लिखने की शुरुआत कर बाल अवस्था समाप्त होने के साथ ही युवा अवस्था के पहले पायदान में ही आतंकवाद के बाद युद्ध जैसी घटनाओं को पनपने पर उससे पैदा हुए हालात एवं उन हालातों से जूझ रहे विषय आधारित एक नाबालिक बालक की जीवनी पर लिखी गई किताब प्रकाशित कर युवाओं को प्रेरणा स्त्रोत बनी है एवं किताब ऑनलाइन काफी चर्चित भी हो रही है।

अंग्रेजी माध्यम में प्रकाशित की गई है किताब व्हाट इज दिस कई सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर भी उपलब्ध है। लेखिका अंजलि ने बताया कि लेखन का कार्य को लेकर उनके दादाजी प्रदेश में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री परसादी लाल मीणा की दृढता से प्रेरणा मिली है। आदिवासी बालिका अंजलि द्वारा लिखी गई किताब व्हाट इज दिस ऐसी पुस्तक है जो समसामयिक आकर्षक विषय के कारण चर्चा का विषय भी बनी हुई है। अंजलि बताती हैं कि उसके द्वारा आईआईटी में चयन होने से पहले पुस्तक लिखने का दौर जारी था एवं रुडकी आईआईटी कॉलेज में अध्ययन के दौरान इस अंग्रेजी माध्यम की किताब को अंतिम रूप देकर प्रकाशन किया गया। जहां पहली बार पुस्तक लिखने के दौरान उसमें हुई त्रुटियों को उसके सहपाठियों द्वारा किताब में कमियों के बाद की गई आलोचना ने तेजी से बेहद और अच्छे लेखन के अवसर प्रदान किए साथ ही उन्हें लेखन और निखारने का मौका भी मिला। जब वह 10 साल की थी तो उनके द्वारा किताब लिखने का मानस बनाया गया था लेकिन पर्याप्त समझ के अभाव के साथ लेखन कौशल की कमी के चलते समय रहते किताब लिखने का पूरा कार्य नहीं कर पाई थी।

अंजलि ने बताया कि लेखन कार्य को लेकर उनके पिता एडवोकेट एवं प्रदेश कांग्रेस कमेटी के पूर्व सचिव रहे कमल मीणा में उनकी माता सुमन मीणा द्वारा नियमित रूप से लिखी जा रही किताब की प्रगति के बारे में पूछ कर प्रोत्साहित किया जाता था इसके कारण लेखन कार्य में ज्यादा बल मिलता था। ग्रामीण क्षेत्र की आदिवासी समुदाय की संभवत पहली बालिका होने के कारण उम्मीद की जा रही है कि अंजलि द्वारा लिखी गई अंग्रेजी माध्यम की इस पुस्तक व्हाट इज दिस को लेकर उनको गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड के खिताब में शामिल किया जा सकता है।

राशिफल

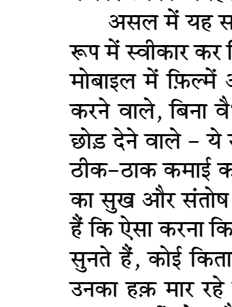

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 22 अगस्त, 2022

भाद्रपद मास, कृष्ण पक्ष, एकादशी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2079, मृगशिरा नक्षत्र प्रात: 7:41 तक, वज्र योग रात्रि 11:39 तक, बव करण सांय 4:52 तक, चन्द्रमा मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-वृष, बुध-कन्या, गुरू-मीन, शुक्र-कर्क, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज एकादशी व्रत स्मार्तों का है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:41 तक, शुभ 9:17 से 10:54 तक, चर 2:06 से 3:42 तक, लाभ-अमृत 3:42 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:05, सूर्यास्त 6:54

मेष
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सुसंदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक/वित्तीय मामलों में प्रगति होगी। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। प्रतिष्ठित व्यक्तियों से व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

कर्क
व्यक्तिगत कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी और मन में असंतोष बना रहेगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

सिंह
आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए यात्रा संभव है। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी।

वृश्चिक
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

धनु
परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कुंभ
व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा है। आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन
परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।